इन्टर (द्वितीयवर्ष)
मैथिली

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि प्राध्यापक) एवं
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (847235)

निरुक चरित्र चित्रण:-

ललका पाग क कथा अपन सासुरमे उपस्थित जीवन-निर्वाह करबा लेल विवश आछि निरु। ई कथाक नायिका छथि- निरु एक धनिष्ठ मैथिली ब्राह्मणक पुत्री छथि। बचपनहिमे पिता स्वर्गवासी भऽ गेल छलथिन्ह। पिताक स्वर्गवासी होयबाक एगारह वा बारह वर्षक बाद भाई भिंगुरनाथ झा आगाँ अबैत छथिन्ह आ निरुक विवाह चण्डीपुरक रामनगर चौधरीक पुत्र राधाकान्तसँ होइत छनि। निरु बड़ प्रसन्न छलीह कारण जे घरक पछबारीमे एकटा बड़कीटा पोखरि रहथि। ओहि पोखरिमे निरु नेहाए ललक सँ ई बात भाई साहेब आगाँ जकरा पसारि गेला। निरुक बातसँ राधाकान्तकेँ बड़ दुःख छलनि। राधाकान्तके आब निरुक छायासँ सेहो घृणा होमए लगैत छनि। ई कतेको दिन धरि चलैत रहल। राधाकेँ रहनि क्रोध, निरुकेँ रहनि अभिमान। निरु बड़ नीक छलीह। स्वभावसँ लजकोतरि आ चंचल सेहो

चुपे रहि तेँ किछु सहैत रहलीह। भोरे उठि स्नानादि आ ठाकुरक हेतु चाह बनाबथि, भानस भात करथि आ अन्य गृहकार्य सेहो करए अपना घर मे कतहु कोनो कोनमे छुटि रहथि। किछु दिनक बाद ठीके राधाकान्त बाबू दरभंगा पढ़ए लेल चलि गेल।

राधा कहियाँ कहियो राति बीचमे गाम आबैत छलाह तँ चननपुरवालीसँ एकान्ती दुकान्त करैत रहैत छल। एक राति चननपुरवालीक कहला पर राधा तिनक कोठरी मे जुतय छलाह। तिनके राधाकान्त कहलनि - हम दोसर विआह करए रहल छी। ई तिनक किछु नहि कहलनि। आइक युगमे तँ दू विवाह किसले आछि। किछु दुःख होयत नहि, कोनो दुख नहि। कारण अधिक दुख तँ हमरो दुख भेल। तिनक ~~बाबुर आपन~~ अपन ठाकुर हारिकार दिन बिदा भेल। तिनक कहैत छथिन ठाकुर जे - आइक चनचहिए राहिकम सँ बरयबाक चाही, जीवित छोहि नहि। तिन छटपटाइत रहि गेलीह।

राधाक विवाहक तैयारि होमय लागल। तिन दुनका लोकनिक अपना परिवारक इन्तजाम मे लागि गेल रहथि। किछु नहि बजैत छलीह। स्वामीकेँ प्रसन्न रखबाक लेल ओ विवाहक लगन, पता राधाकेँ ताबमे रहलनि उता ओर दुख भेलनि हृदयकेँ कठोर बनाएक वेदना दपबल नहि करलन्हि। दुनक कितियाविवाह राहि गेल आ तिनके राधा भेटि गेलनि।

Basant Kumar
22/01/20